

श्री कृष्ण चालीसा

बंशी शोभति कर मधुर, नील जलद तन श्याम ।
 अरुण अधर जनु बमिब फल, नयन कमल अभरिम । ।
 पूरण इन्द्र अरवन्दि मुख, पीताम्बर शुभ साज ।
 जय मनमोहन मदन छवि, कृष्णचंद्र महाराज । ।

जय यदुन्दन जय जगवंदन, जय वासुदेव देवकी नंदन । ।
 जय यशोदा सुत नन्द दुलारे, जय प्रभु भक्तन के रखवारे । ।
 जय नटनागर नाग नथइया, कृष्ण कन्हैया धेनु चरइया । ।
 पुननिख पर प्रभु गरिविर धारो, आओ दीनन कष्ट नवारो । ।
 बंसी मधुर अधर धरी तेरी, होवे पूरण वनिय यह मेरी । ।
 आओ हरि पुनि माखन चाखो, आज लाज भक्तन की राखो । ।
 गोल कपोल चबुक अरुनारे, मृदु मुस्कान मोहनी डारे । ।
 राजति राजवि नयन वशाला, मोर मुकूट वैजयंती माला । ।
 कुंडल श्रवण पीतपट आछे, कटी ककिणी काछनी काछे । ।
 नील जलज सुन्दर तनु सोहे, छवि लखी सुर नर मुनिमन मोहे । ।
 मस्तक तलिक अलक घुँघराले, आओ कृष्ण बांसुरी वाले । ।
 करि पिय पान, पुतनहा तारयो, अका बका कागा सुर मारयो । ।
 मधुवन जलत अग्नि जब ज्वाला, भये शीतल, लखतिही नंदलाला । ।
 सुरपति जब ब्रज चढयो रसिआई, मूसर धार बारा बरसाई । ।
 लगत-लगत ब्रज चहन बहायो, गोवर्धन नखधारी बचायो । ।
 लखी यशोदा मन भ्रम अधिकाई, मुख महँ चौदह भुवन दिखाई । ।
 दुष्ट कंस अत ऊधम मचायो, कोट किमल जब फूल मंगायो । ।
 नाथ कालयिहा तब तुम लीन्हें, चरनचहि दै नरिभय कनिहें । ।
 करी गोपनि संग रास वलासा, सब की पूरण करी अभलाषा । ।
 केतकि महा असुर संहारयो, कंसहा केश पकडी दी मारयो । ।
 मातु पति की बंदी छुडाई, उग्रसेन कहाँ राज दलाई । ।
 महा से मृतक छहों सुत लायो, मातु देवकी शोक मटायो । ।
 भोमासुर मुर दैत्य संहारी, लाये षट दश सहस कुमारी । ।
 दै भीमहा त्रिणि चीर संहारा, जरासधि राक्षस कहाँ मारा । ।
 असुर वृकासुर आदकि मारयो, भक्तन के तब कष्ट नवारियो । ।
 दीन सुदामा के दुःख तारयो, तंदुल तीन मुठी मुख डारयो । ।
 प्रेम के साग वदुरि घर मांगे, दुरयोधन के मेवा त्यागे । ।
 लखी प्रेम की महमि भारी, ऐसे श्याम दीन हतिकारी । ।
 भारत के पार्थ रथ हांके, लएि चक्र कर नहीं बल ताके । ।
 नजि गीता के ज्ञान सुनाये, भक्तन हरदय सुधा बरसाए । ।
 मीरा थी ऐसी मतवाली, वषि पी गई बजाकर ताली । ।
 राणा भेजा सांप पटारी, शालगिराम बने बनवारी । ।
 नजि माया तुम वधिहि दिखायो, उरते संशय सकल मटायो । ।
 तव शत नदि करी तत्काला, जीवन मुक्त भयो शशुपाला । ।
 जबहीं द्रौपदी टेर लगाई, दीनानाथ लाज अब जाई । ।
 तुरतहा बिसन बने नन्द लाला, बढे चीर भै अरि भुँह काला । ।
 अस अनाथ के नाथ कन्हैया, डूबत भंवर बचावत नैया । ।
 सुन्दरदास आस उर धारी, दयादृष्टि कीजे बनवारी । ।
 नाथ सकल मम कुमति नवारो, क्षमहु बेगि अपराध हमारो । ।
 खोलो पट अब दरः

यह चालीसा कृष्ण का, पाठ करे उर धारी ।
अष्ट सदिधनिव नदिधफिल, लहे पदार्थ चारी